ISBN:978-81-974990-9-8

9.कोविड–19 का सामाजिक एवं आर्थिक विकास पर प्रभाव

अमित कुमार

सहायक प्राध्यापक,
विमल विभूति कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भागलपुर (बिहार).

सारांश–

भारत में 2020 कोरोनावायरस महामारी का आर्थिक प्रभाव काफी हद तक विघटनकारी रहा है। सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार वित्त वर्ष 2020 की चौथी तिमाही में भारत की वृद्धि दर घटकर 3.1 प्रतिशत रह गई। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का अनुमान है कि भारतीय अर्थव्यवस्था–4.5 प्रतिशत की दर से सिकुड़ जायेगी। कोविड–19 ने मानवीय पीड़ा को बढ़ाया है, अर्थव्यवस्था को कमजोर किया है, दुनिया भर में अरबों लोगों के जीवन को उलट–पुलट कर दिया है, और स्वास्थ्य, आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक क्षेत्रों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य पारिस्थितिकी क्षेत्र, ऊर्जा क्षेत्र, समाज और अर्थव्यवस्था पर कोविड–19 प्रकोप के प्रभाव का व्यापक विश्लेषण प्रदान करना और कोविड–19 के संचरण को कम करने के लिए उठाए गए वैश्विक निवारक उपायों की जांच करना है। यह विश्लेषण कोविड–19 के लिए प्रमुख प्रतिक्रियाओं, वर्तमान पहलों की प्रभावकारिता को उजागर करता है, और अधिकारियों, व्यवसाय और उद्योग के लिए उपलब्ध जानकारी के अपडेट के रूप में सीखे गए सबक को सारांशित करता है। इस समीक्षा में पाया गया कि संक्रमित घरों और संगरोध सुविधाओं से कचरे के संग्रह और निपटान में 72 घंटे की देरी वायरस के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए व्यापक क्षेत्रवार योजनाओं के साथ–साथ एक मजबूत उद्यमिता–अनुकूल अर्थव्यवस्था की आवश्यकता है ताकि महामारी के चरम पर व्यवसाय टिकाऊ हो सके। सामाजिक–आर्थिक संकट ने ऊर्जा में निवेश को नया रूप दिया है और ऊर्जा क्षेत्र को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, जिसमें अधिकांश निवेश गतिविधि गतिशीलता प्रतिबंधों के कारण व्यवधान का सामना कर रही है। ऊर्जा परियोजनाओं में देरी से आने वाले वर्षों में अनिश्चितता पैदा होने की आशंका है। कोविड–19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर सामाजिक और आर्थिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। जो प्रमुख है।

सामाजिक प्रभाव–

1. **स्वास्थ्य संकट**– महामारी के कारण स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी दबाव पड़ा, जिससे अस्पतालों में संसाधनों की कमी और चिकित्सा सेवाओं में अवरोध उत्पन्न हुआ।

2. **शिक्षा में व्यवधान**– लॉकडाउन और सामाजिक दूरी के कारण स्कूल और विश्वविद्यालय बंद हो गए, जिससे शिक्षा की निरंतरता में रुकावट आई। ऑनलाइन शिक्षा का महत्व बढ़ा, लेकिन डिजिटल डिवाइड के कारण सभी छात्रों को समान अवसर नहीं मिल सके।
3. **मनोवैज्ञानिक प्रभाव–** लॉकडाउन और सामाजिक दूरी के नियमों ने लोगों में मानसिक तनाव, अकेलापन और चिंता की भावनाओं को बढ़ाया।

आर्थिक प्रभाव–

1. **रोजगार में कमी**– लॉकडाउन और व्यापारिक गतिविधियों में कमी के कारण कई क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोजगार घट गए। असंगठित क्षेत्र के मजदूर और छोटे व्यापारियों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा।
2. **आर्थिक मंदी–** उत्पादन, वितरण और उपभोग के चक्र में अवरोध के कारण आर्थिक गतिविधियों में कमी आई, जिससे वैश्विक आर्थिक मंदी की स्थिति उत्पन्न हुई।
3. **वित्तीय अस्थिरता–** कई देशों में सरकारों ने आर्थिक पैकेज और राहत योजनाओं की घोषणा की, जिससे वित्तीय घाटा बढ़ा और अर्थव्यवस्थाओं पर बोझ पड़ा।

इन प्रभावों के परिणामस्वरूप, दीर्घकालिक रणनीतियों की आवश्यकता है जो स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्रों में सुधार सुनिश्चित करें, साथ ही भविष्य की महामारियों के लिए तैयारी भी बढ़ाएं।

दीर्घकालिक सामाजिक प्रभाव के नौ क्षेत्र–

इस समीक्षा के दौरान, हमने कोविड–19 के कारण होने वाले प्रभावों पर सख्त ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की है– लेकिन जैसा कि हमने पाया, महामारी के कई प्रभाव मौजूदा रुझानों की गति को बढ़ाते हैं। प्रभाव के साक्ष्य ने उन कारकों की ओर दृढ़ता से इशारा किया जो महामारी से पहले थे और महामारी से भी आगे रहेंगे। यह अपेक्षित है, क्योंकि यह वह पैटर्न भी है जो पूरे इतिहास में महामारियों और प्रमुख संकटों ने प्रदर्शित किया है।

महामारियाँ उतनी ही सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ हैं जितनी चिकित्सा और स्वास्थ्य समस्याएँ। हम इस समीक्षा का समापन दीर्घकालिक सामाजिक प्रभाव के नौ क्षेत्रों के एक सेट के साथ करते हैं, जो ऊपर उल्लिखित प्रभावों, जोखिमों, चुनौतियों और अवसरों के संश्लेषण और विश्लेषण से उत्पन्न होते हैं। दीर्घकालिक प्रभाव के ये नौ क्षेत्र संपूर्ण नहीं हैं, लेकिन वे महत्वपूर्ण होंगे, और हमें उम्मीद है कि वे आगे की सहभागिता और समझ के लिए एक उपयोगी प्रारंभिक बिंदु प्रदान करेंगे कि हम उन्हें संबोधित करने के लिए एक साथ कैसे काम करेंगे।

1. स्थानीय समुदायों का बढ़ता महत्व–

महामारी के दौरान स्थानीय समुदाय पहले से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं। स्थानीय और अति–स्थानीय धर्मार्थ और स्वैच्छिक संगठन कोविड–19 की प्रतिक्रिया के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं, लेकिन सामुदायिक बुनियादी ढांचे की ताकत के आधार पर समुदायों के बीच असमानताएँ हैं। बदलती परिस्थितियों और चुनौतियों का जवाब देने की राष्ट्रीय क्षमता के लिए स्थानीय स्तर पर समुदायों और सामुदायिक सहभागिता के एक मजबूत नेटवर्क को बनाए रखने के प्रयास की आवश्यकता है।

2. शासन में विश्वास का निम्न और अस्थिर स्तर–

एक संक्षिप्त आरंभिक वृद्धि के बाद, यू.के. सरकार में विश्वास और राष्ट्रीय एकता की भावना में गिरावट आ रही है। स्थानीय सरकार में विश्वास और स्थानीय एकता की भावना अधिक और स्थिर रही है। विश्वास में गिरावट एक बड़ी चुनौती है जिसका समाधान किया जाना चाहिए क्योंकि यह व्यापक सामाजिक और स्वास्थ्य लाभों के लिए सार्वजनिक व्यवहार को संगठित करने की क्षमता को कमजोर करता है।

3. भौगोलिक असमानताओं का बढ़ना–

भौगोलिक और स्थानिक असमानताएँ बढ़ गई हैं। स्वास्थ्य और कल्याण, स्थानीय आर्थिक जोखिम और लचीलापन, गरीबी और अभाव, और प्रतिक्रिया योजना सभी का एक महत्वपूर्ण स्थान है जिसने संकट के प्रभाव को आकार दिया है। इन असमानताओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है क्योंकि वे उन तरीकों को उजागर करते हैं जिनमें भौगोलिक स्थान, भौतिक बुनियादी ढांचे और सामाजिक स्थितियों के संयोजन का अर्थ है कि विभिन्न स्थानों पर अलग–अलग प्राथमिकताओं की आवश्यकता हो सकती है।

4. संरचनात्मक असमानताएं बढ़ना–

कोविड–19 और इसके प्रति सरकार की प्रतिक्रिया ने अलग–अलग लोगों को अलग–अलग तरीकों से प्रभावित किया है, जो अक्सर आय और गरीबी में मौजूदा संरचनात्मक असमानताओं, शिक्षा और कौशल में सामाजिक–आर्थिक असमानताओं और अंतर–पीढ़ीगत असमानताओं को बढ़ाता है– जिसका खास असर बच्चों (कमजोर बच्चों सहित), बच्चों वाले परिवारों और युवाओं पर पड़ता है। लिंग, नस्ल और जातीयता और सामाजिक वंचना के आयामों के साथ इनके भीतर अलग–अलग प्रभाव हैं जो उजागर और बढ़े हुए हैं, साथ ही सामाजिक विकास, रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित प्रभाव भी हैं जो सभी अलग–अलग तरीके से प्रभावित और आपस में जुड़े हुए हैं। साक्ष्य इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि असमानता के अंतर्निहित परस्पर जुड़े प्रणोदकों को संबोधित करना एक प्रमुख चुनौती है।

5. बदतर स्वास्थ्य परिणाम और बढ़ती स्वास्थ्य असमानताएँ–

संरचनात्मक असमानताओं की तरह, कोविड–19 के लिए स्वास्थ्य परिणामों ने मौजूदा स्वास्थ्य असमानताओं के पैटर्न का अनुसरण किया है। ''लॉन्ग कोविड'' के साथ–साथ देखभाल की मांग में देरी और संसाधनों के पुनर्प्राथमिकीकरण से स्वास्थ्य पर लगातार प्रभाव पड़ रहे हैं। घर और सामुदायिक देखभाल संक्रमण की रोकथाम और नियंत्रण उपायों में कमियाँ, और सामाजिक देखभाल प्रावधान की संरचना और वित्त पोषण में असमानताएँ उजागर हुई हैं। ये सभी ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर आगे चलकर स्वास्थ्य प्रणाली में गंभीर अंतराल से बचने के लिए महत्वपूर्ण ध्यान देने की आवश्यकता है।

6. मानसिक स्वास्थ्य के महत्व के बारे में अधिक जागरूकता–

महामारी और इससे निपटने के लिए उठाए गए विभिन्न उपायों के परिणामस्वरूप मानसिक स्वास्थ्य के अलग–अलग परिणाम सामने आए हैं।

बच्चों और युवाओं के लिए सेवाओं के अलावा, नए मामलों और पहले से मौजूद बीमारियों से पीड़ित लोगों के लिए सहायता तक पहुँच भी बाधित हुई है। अगर समाज में मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के कारणों और समाधानों पर नए सिरे से ध्यान नहीं दिया जाता है, जिसमें असमानता के संरचनात्मक और मूल कारणों से निपटना भी शामिल है, तो दोनों ही विशेष समूहों के लिए दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य प्रभाव पैदा करने की क्षमता रखते हैं।

7. अर्थव्यवस्था में राजस्व प्रवाह पर दबाव–

हालाँकि विस्तृत आर्थिक विश्लेषण रिपोर्ट के दायरे से बाहर थे, लेकिन मध्यम से दीर्घ अवधि में सरकारी खर्च पर अतिरिक्त दबाव पड़ने की संभावना है, क्योंकि बेरोजगारी, असफल व्यवसायों, घटते उपभोग और अर्थव्यवस्था की संरचना में महत्वपूर्ण बदलावों के कारण ऋण के बढ़ते स्तर और संभावित रूप से घटते कर राजस्व के परिणामस्वरूप। सामाजिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए तंत्र और अभिनेताओं की विविधता को ध्यान में रखते हुए, राजस्व सृजन के संतुलन को संबोधित करना और गैर–आर्थिक प्रभावों के विरुद्ध व्यय का मूल्यांकन करना अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होगा।

8. बढ़ती बेरोजगारी और बदलते श्रम बाजार–

रोजगार और घरेलू आय के स्तर में गिरावट आई है और निकट भविष्य में स्थिति और खराब होने की संभावना है। इससे सामाजिक सुरक्षा पर निर्भरता बढ़ेगी, जिससे निपटने के लिए मौजूदा व्यवस्था शायद सक्षम नहीं है।

यह न केवल उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण होगा जो राज्य सामाजिक सुरक्षा सहायता पर निर्भर हैं (या हो जाएंगे), बल्कि इसलिए भी क्योंकि मांग के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण समायोजन की आवश्यकता हो सकती है।

9. शिक्षा और कौशल के प्रति नई जागरूकता–

सभी स्तरों पर शिक्षा तक पहुँच खोने के परिणाम, साथ ही मूल्यांकन में परिवर्तन, आने वाले वर्षों में महसूस किए जाएँगे, और खोई हुई शिक्षा को पूरी तरह से पुनः प्राप्त करना असंभव है।

इसने उपलब्धि में मौजूदा सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को बढ़ा दिया है और डिजिटल असमानता को उजागर किया है। चूँकि भविष्य की समृद्धि और समाज के फलने–फूलने के लिए एक उच्च–कौशल अर्थव्यवस्था आवश्यक होगी, इसलिए यह विचार करना महत्वपूर्ण होगा कि क्या आजीवन शिक्षा के अवसर पर्याप्त रूप से व्यापक, विविध और लचीले हैं।

कॉविड–19 का आर्थिक विकास पर प्रभावः–

कोविड–19 महामारी खतरनाक गति से फैल रही है, लाखों लोग संक्रमित हो रहे हैं और आर्थिक गतिविधियां लगभग ठप्प हो गई हैं, क्योंकि देशों ने वायरस के प्रसार को रोकने के लिए आवाजाही पर कड़े प्रतिबंध लगा दिए हैं। जैसे–जैसे स्वास्थ्य और मानव क्षति बढ़ रही है, आर्थिक क्षति भी स्पष्ट हो रही है और यह दशकों में दुनिया को लगा सबसे बड़ा आर्थिक झटका है।इस चिंताजनक परिदृश्य के मद्देनजर, नीति निर्माताओं के लिए तत्काल प्राथमिकता स्वास्थ्य संकट को संबोधित करना और अल्पकालिक आर्थिक क्षति को रोकना है। दीर्घावधि में, संकट के समाप्त होने के बाद आर्थिक विकास के मूलभूत चालकों को बेहतर बनाने के लिए अधिकारियों को व्यापक सुधार कार्यक्रम शुरू करने की आवश्यकता है। अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों ही अवधि में पुनर्निर्माण की नीतियों में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करना और विकास को पुनः गति देने के लिए लक्षित प्रोत्साहन उपाय लागू करना शामिल है।निजी क्षेत्र को समर्थन और लोगों को सीधे पैसे पहुँचाना शामिल है। शमन अवधि के दौरान, देशों को घरों, फर्मों और आवश्यक सेवाओं के समर्थन के साथ आर्थिक गतिविधि को बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

वैश्विक समन्वय और सहयोग– महामारी के प्रसार को धीमा करने के लिए आवश्यक उपायों, तथा आर्थिक क्षति को कम करने के लिए आवश्यक आर्थिक कार्रवाइयों, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय समर्थन भी शामिल है – से सार्वजनिक स्वास्थ्य लक्ष्यों को प्राप्त करने और एक मजबूत वैश्विक सुधार को सक्षम करने का सबसे बड़ा अवसर मिलता है।

निष्कर्ष–

यह रिपोर्ट महामारी के सामाजिक प्रभाव पर विभिन्न क्षेत्रों में साक्ष्यों को एक साथ लाती है। यह दर्शाता है कि कोविड–19 ने कई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव उत्पन्न किए हैं, जिनका दीर्घकालिक प्रभाव होगा।

विशेष रूप से, महामारी ने समाज में विद्यमान असमानताओं को उजागर किया है, उन्हें बढ़ाया है और उन्हें और मजबूत किया है। इसने कुछ व्यक्तियों और समूहों को विशेष स्थानों और समुदायों में रहने के कारण पहले से भी अधिक असुरक्षित बना दिया है।

हालाँकि, यह सिर्फ महामारी का मामला नहीं है जिसने मौजूदा समस्याओं को और बदतर बना दिया है। इसने ताकत, लचीलापन, रचनात्मकता और नवाचार के क्षेत्रों को भी उजागर किया है। हमें उम्मीद है कि यह समृद्ध साक्ष्य आधार नीति निर्माताओं, नागरिक समाज, मीडिया और अन्य लोगों के लिए एक उपयोगी संसाधन साबित होगा जो बदलते परिदृश्य को समझने की कोशिश कर रहे हैं।

इस साक्ष्य समीक्षा के साथ एक अलग रिपोर्ट, शेपिंग द कोविड डिकेड भी है, जिसमें नीति निर्माताओं के लिए इस समीक्षा में उल्लिखित रुझानों पर प्रतिक्रिया देने के लिए कुछ संभावित विकल्पों की रूपरेखा दी गई है। इतिहास बताता है कि उथल–पुथल के समय, जैसे कि महामारी, समाज को नया रूप देने के अवसर हो सकते हैं, लेकिन इसके लिए दूरदर्शिता की आवश्यकता होती है और प्रमुख निर्णयकर्ताओं को मिलकर काम करना होता है।

सन्दर्भ–

1. लॉकडाउन में राहत के बाद भी ग्रोथ क्यों नहीं कर पा रही अर्थव्यवस्था? जानें॰ जनसत्ता. 13 जुलाई 2020. अभिगमन तिथि 25 जुलाई 2020.
2. ष्कोरोना के सामने घुटनों पर आई दुनिया की अर्थव्यवस्थाष् आज तक. मूल से 29 जून 2020को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 जुलाई 2020.
3. आईएमएफ ने कहा, कोविड–19 का लगातार फैलाव भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए खतरा हिन्दुस्तान लाइव. अभिगमन तिथि 25 जुलाई 2020.
4. कोरोना वायरस के कारण भारत में पैदा हुईं आर्थिक चुनौतियां ORF- मूल से 10 मई 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 जुलाई 2020.
5. Ward Alex (2020-03-24)- "India's coronavirus lockdown and its looming crisis elplained"- Vox(अंग्रेजी में). मूल से 28 मार्च 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020–03–25.

6. Bureau Our- "PM Modi calls for 'Janata curfew' on March 22 from 7 AM-9 PM"- @businessline(अंग्रेजी में). मूल से 20 मार्च 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 March 2020.
7. "India's 1-3bn population told/| to stay at home"- BBC News-2020–03–25. मूल से 31मार्च 2020को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 March 2020.
8. पूरा देश लॉकडाउन की ओर, 31 मार्च से पहले फिर हो सकता है जनता कर्फ्यू का आह्वान अमर उजाला. अभिगमन तिथि 25 जुलाई 2020.
9. कोरोना का प्रभाव, 2020 में 4.5 फीसदी GDP का अनुमानः सरकार अमर उजाला. मूल से 9 जुलाई 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 जुलाई 2020.